Date :- 11/07/2020	Degree Part-I (Hons.)
Content Writer :-	Paper :- I
Dr. Abhay Kumar Pathak	Content of the Paper :-
Deptt. of Economics,	Micro Economics
Marwari College,	Module-4
Darbhanga (LNMU)	

TOPIC :- ANALYSIS OF MARKET CONDITION MONOPOLY

Date ___/___/______

अर्थशास्त्र में प्रतियोगिता के आधार पर बाजार को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जाता है पहला पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति को कहा जाता है, तो दूसरा अपूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति को। अपूर्ण प्रतियोगिता के बाजार की स्थिति के अंतर्गत एकाधिकार, एकाधिकृत प्रतियोगिता, अल्पाधिकार एवं द्वैयाधिकार को शामिल किया जाता है।

एकाधिकार बाजार वह बाजार है जिसमें वस्तु का केवल एक ही उत्पादक एवं विक्रेता होता है तथा इसका कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं होता है। दूसरी तरफ विक्रेता के वस्तु का बाजार में कोई प्रतिस्थानापन्न वस्तु नहीं होती जिसके कारण एकाधिकारी फर्म वस्तु की पूर्ति पर एकमात्र नियंत्रण रखती है। अर्थात एकाधिकार से हमारा तात्पर्य बाजार के उस परिस्थिति से है जिसमें एक विशिष्ट वस्तु की पूर्ति पर किसी एक उत्पादक अथवा फर्म का पूर्ण नियंत्रण रहता है।

एकाधिकार की विशेषतायें :-

एकाधिकारी बाजार के विश्लेषण के क्रम में एकाधिकार के निम्नांकित विशेषताओं को रेखांकित किया जा सकता है :-

(1) अकेला उत्पादक अथवा विक्रेता।
(2) फर्म एवं उद्योग एक-दूसरे के पर्यायवाची।
(3) कोई स्थानापन्न वस्तुएँ उपलब्ध नहीं।
(4) नई फर्मों के प्रवेश पर प्रभावपूर्ण रोक।
(5) औसत आय एवं सीमान्त आय वक्र।
(6) स्वतंत्र कीमत नीति।
(7) कीमत विभेद संभव।
(8) वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण।
(9) दीर्घकाल में असामान्य लाभ।

एकाधिकार के उपरोक्त विशेषताओं

Kataraza

के अध्ययन के आलोक में हम बाजार की इस परिस्थिति के अंतर्गत वस्तु के कीमत निर्धारण की व्याख्या निम्नांकित रूप से कर सकते हैं :-

(I) अल्पकाल में एकाधिकार में कीमत निर्धारण :-

अल्पकाल में एकाधिकारी की उत्पादन क्षमता निश्चित होती है। वह उत्पादन के वर्तमान साधनों द्वारा ही पूर्ति में वृद्धि कर सकता है वह अपने प्लान्ट के आकार में परिवर्तन नहीं कर सकता। यदि माँग में वृद्धि के कारण कीमत में वृद्धि होती है तो एकाधिकारी एक सीमा तक ही उत्पादन में वृद्धि कर सकता है इसके विपरीत यदि माँग घटने के कारण कीमत घटती है तो एकाधिकारी अपने प्लान्ट के उत्पादन क्षमता के एक भाग का प्रयोग न करके कुछ अंश तक उत्पादन की मात्रा में कमी कर सकता है। ऐसी स्थिति में इसका लाभ काफी कम हो सकता है साथ ही हो सकता है उसे हानि भी प्राप्त हो परन्तु अल्पकाल में एकाधिकारी तब तक उत्पादन करता रहेगा जब तक उसकी औसत परिवर्तनशील लागत वसूल होती रहती है, परन्तु ज्यों ही कीमत उसके औसत परिवर्तनशील लागत से कम हो जाएगी, वह उत्पादन करना बंद कर देगा। निष्कर्षस्वरूप हम कह सकते हैं कि एकाधिकार में अल्पकाल में फर्म के समक्ष निम्नांकित तीन स्थितियाँ उत्पन्न होते हैं :-

(a) एकाधिकारी फर्म को असामान्य लाभ प्राप्त हो सकता है।
(b) एकाधिकारी फर्म को सामान्य लाभ प्राप्त हो सकता है।
(c) एकाधिकारी फर्म को हानि हो सकती है।

(II) दीर्घकाल में एकाधिकार में कीमत निर्धारण :-

दीर्घकाल में एकाधिकारी फर्म आवश्यकतानुसार उत्पादन के सभी साधनों की मात्रा में परिवर्तन कर सकती है। फर्म अपने प्लान्ट के आकार को भी छोटा-बड़ा कर सकती है। इसलिए दीर्घकाल में

एकाधिकारी हानि की अवस्था में उत्पादन जारी नहीं रखेगा वह उत्पादन बंद कर देगा। एकाधिकारी होने के कारण वह दीर्घकाल में इस प्रकार से व्यवस्था करेगा कि उसे असामान्य लाभ प्राप्त हो। चूंकि दीर्घकाल में एकाधिकारी फर्म या उद्योग के विस्तार या संकुचन की पूर्ण संभावना होती है अतः एकाधिकारी फर्म बड़े पैमाने पर उत्पादन कर सकती है। दीर्घकाल में एकाधिकारी फर्म के साम्य पर उत्पादन के नियमों का प्रभाव पड़ता है। दीर्घकाल में एकाधिकारी को तीनों ही लागत दशाओं यथा वृद्धिमान लागत नियम, ह्रासमान लागत नियम तथा लागत स्थिरता नियम में असामान्य लाभ प्राप्त होता है। तीनों दशाओं में लाभ की स्थितियाँ निम्नवत हैं :-

(a) घटती लागत :- यदि उत्पादन घटती लागत के अंतर्गत हो रहा है तो इसका अभिप्राय यह होगा कि जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ रहा है, वैसे-वैसे लागत घट रही है। इस अवस्था में एकाधिकारी को कीमत कम रखनी चाहिए एवं अधिक मात्रा में उत्पादन करनी चाहिए।

(b) स्थिर लागत :- इस अवस्था में चाहे उत्पादन अधिक किया जाए या कम, उत्पादन लागत समान रहेगी।

(c) बढ़ती लागत :- यदि उत्पादन बढ़ती लागतों के अधीन हो रहा है अर्थात जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ता है, उत्पादन लागत भी बढ़ जाती है तो इस अवस्था में एकाधिकारी के लिए यह उचित होगा कि वह उत्पादन कम मात्रा में करे तथा वस्तु की कीमत ऊँची निश्चित करे।